भगवद गीता के सोलहवे अध्याय में बताये गए २६ दैवी गुणों में एक प्रमुख गुण **सत्य** है | सत्य का अर्थ है जो जैसा है, जो जिस अवस्था में है, वैसा ही देखा जाए, वैसा ही समझा जाए और वैसा ही बोला जाए | इस प्रकार, **सत्य - विकार रहित, साफ़ और ईश्वरीय प्रतीक है** | सत्य **कपट का विपरीत** है |

**सत्य उस मिठास की तरह है जिसे** अपने कर्मों में मिश्रित करके, हमारे कर्म इश्वर को समर्पित करने के लायक पुष्प बन जाते हैं | जो सत्य को समझता है, यह जानता है की सत्य ही इश्वर हैं और इश्वर का आदेश है - अहिंसा, सदाचार, प्रेम, अमानित्वम्, निष्काम कर्म और स्वधर्म |

**सत्य को अपनाने में सबसे बड़ी कठिनाई है - कपट और भय** | कपट सीधा सीधा इश्वर से द्रोह करना है परन्तु भय बहुत प्रकार का होता है - निजी, पारिवारिक, सामाजिक इत्यादि परन्तु जब सब कुछ इश्वर ने ही बनाया है और वे ही सत्य पालन का आदेश दे रहे हैं, तो क्या वे हमारी रक्षा नहीं करेंगे? जिस प्रकार, जब एक बच्चा अपनी माँ से गलती करने पे सत्य बोल देता है और निश्चय से माँ के बताये हुए आदेश का पालन करता है, तो फिर उसकी माँ उसकी सदा रक्षा और मार्गदर्शन करती है (कुछ समय के बाद उस बच्चे को मार्गदर्शन की आवश्यकता भी नहीं पड़ती), उसी प्रकार **सत्य वह दैवी गुण है जो हमारे सारे भय नष्ट कर देता है** |

**सत्य एक नियम है** जिसको पकड़ के जीवन में चलने में पहले अभ्यास करना पड़ सकता है क्योंकि हम सदा ही अपने पूर्व कर्मों के परिणाम के चिंतन में रहते हैं परन्तु सत्य को एक बार पूर्ण रूप से अपना लेने से, सत्य एक अग्नि के प्रकार हमारी चिंताओं का नाश करता है | जैसे, देखा जाए तो हमारे द्वारा किये गए सारे कर्म प्रकृति के तीन गुणों से होते हैं, शरीर तो माध्यम होता है और **जब हम यह कर्म और उसके फलों का त्याग इश्वर को कर देते हैं, तो हमारा परिश्रम उस परम सत्य (इश्वर) में जा मिलता है** - सत्य में जा मिलने से हमारा अन्तःकरण कुछ ऐसा ही प्रतीत करता है की हमारे सर से कुछ भोज कम हो गया, आज हमनें अपने परमात्मा को श्रद्धा पुष्प (कर्म फल) अर्पण किये क्योंकि 'सत्य' तो यह है की मनुष्य को निष्काम कर्म ही करने चाहिएं और निष्काम कर्म स्वतंत्रता देते हैं i.e. we need to live ‘liberated’ and that can only happen if we live in Lord’s संरक्षण – just like Arjuna never moved out of Shri Krishna’s संरक्षण (रथ).

**सत्य (ज्ञान, नियम, यज्ञ, दान, तप, योग)** वह मार्ग है जो हमें इश्वर के निकट ले जाता है और जो सत्य के मार्ग पर एक कदम चलता है, इश्वर उसकी तरफ दस कदम बढ़ाते हैं; धीरे धीरे हमें अपने अंदर की अशुद्धियाँ और विकार दिखने लगते हैं, जब हम उन विकारों को मिटाने की चेष्टा करते हैं, तो हमें दैवी सहायता मिलती है | **धर्म का दूसरा नाम सत्य ही है** | धर्म की स्थापना तो इश्वर ही करते हैं, किन्तु हमारा यह कर्त्तव्य है की उनके बताये हुए मार्ग को अपनाएं और अपना जीवन सफल करें |